रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रुपनगढ (अजमेर) राज.

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र : भौतिक भूगोल

इकाई (I)

भौतिक भूगोल की परिभाषा

भौतिक भूगोल, भूगोल की दो प्रमुख शाखाओं में से एक प्रमुख शाखा है, जिसका अध्ययन भूगोल केन्द्र को प्रदर्शित करता है।

" भौतिक पर्यावरण का अध्ययन ही भौतिक भूगोल है जो कि ग्लोब के धरातलीय उच्चावच (भूआकृति विज्ञान), सागर एवं महासागरों (समुद्र विज्ञान) तथा वायु (जलवायु विज्ञान) के विवरणों का अध्ययन करता है।"

सौर परिवार

सौरमंडल में सूर्य और वह खगोलीय वस्तुएं सम्मिलित हैं, जो इस मंडल में एक दूसरे से गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा बंधे हैं। किसी तारे के इर्द-गिर्द परिक्रमा करते हुए उन खगोलीय वस्तुओं के समूह को ग्रहीय मण्डल कहा जाता है, जो अन्य तारे न हो, जैसे ग्रह, प्राकृतिक उपग्रह, क्षुद्रग्रह, उल्का, धूमकेतु और खगोलीय धूल।

सौरमण्डल में ग्रह => बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण

(स्थिति)।

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु मॉडिपल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

पृथ्वी की गतियाँ और उसका उपग्रह

पृथ्वी की गति को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

① घूर्णन

② परिक्रमण (क्रांति)

1. घूर्णन Rotation → दैनिक गति
   - समय 23 घंटे 56 मिनट, 4.09 सेकेण्ड
   - दिन रात का बनना।

2. परिक्रमण Revolution → वार्षिक गति
   - पृथ्वी का अक्ष पर घूमने के साथ-साथ सूर्य के चारों ओर परिक्रमा
   - 365 दिन 6 घंटे 48 मिनट, 45.51 सेकेंड
   - मौसम में बदलाव

पृथ्वी की गतियाँ

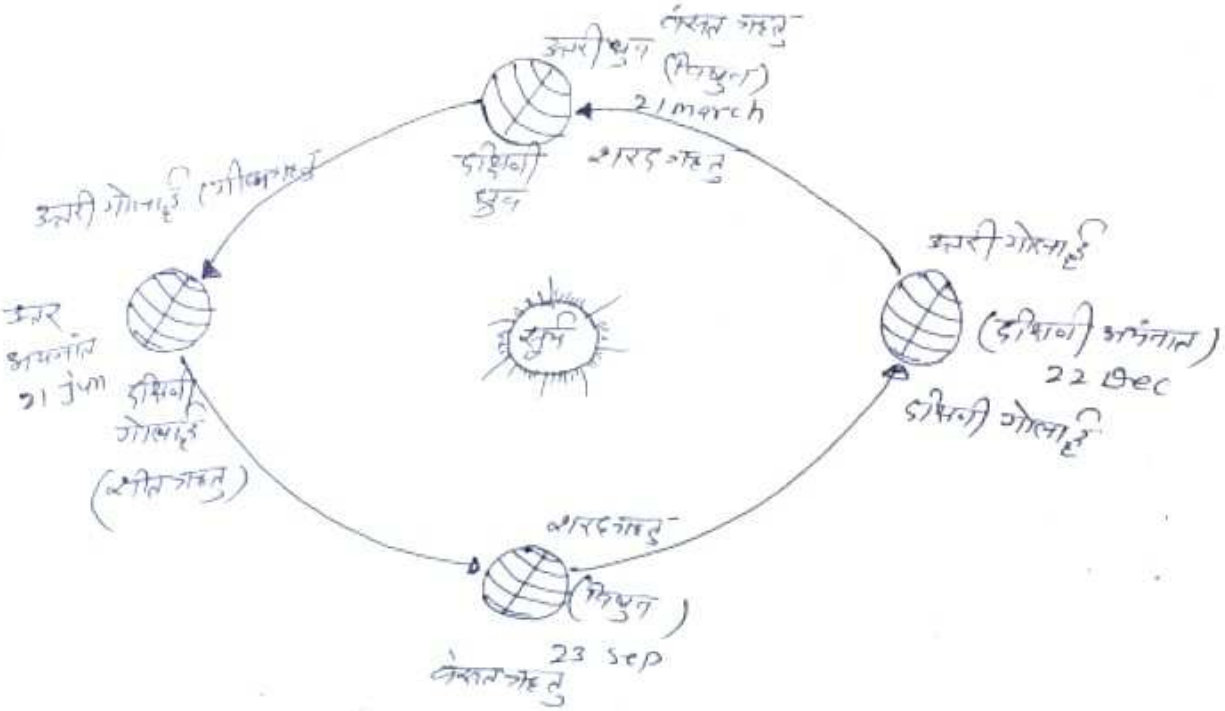

उपग्रह :) 'चन्द्रमा'।

2.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोसियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

पृथ्वी की उत्पत्ति

परिचय ⇒ पृथ्वी सौर्यमण्डल का एक सदस्य ग्रह है, सम्पूर्ण सौर मण्डल की आयु 733 करोड़ वर्ष के लगभग है। पृथ्वी सूर्य से 149,600,000 km की दूरी पर स्थित है।

पृथ्वी को आन्तरिक ग्रह की श्रेणी मे रखा जाता है।

पृथ्वी का निर्माण लगभग 4.54 बिलियन वर्ष पहले, शेष सौरमंडल के साथ, एक विशाल आकाशीय बादल के गुरुत्वीय पतन से हुआ था। प्रारंभिक पतन के लगभग 500 मिलियन वर्ष के बाद पृथ्वी का कोर पहले बना। मेंटल, क्रस्ट बाद मे बने क्योंकि पृथ्वी ठंडी हुई जम गई।

पृथ्वी उत्पत्ति सिद्धान्त के लिए दी गई परिकल्पनाएं निम्न है :→ (अद्वैतवादी)

1) कान्ट की वायव्य राशि परिकल्पना (1755 में)
2) लाप्लास की निहारिका परिकल्पना (1796)

(द्वैतवादी)

1) चैम्बरलीन की ग्रहाणु परिकल्पना
2) जेम्स जीन की ज्वारीय परिकल्पना
3) रसेल की द्वैतारक परिकल्पना
4) होयल तथा लिटिलटन का सिद्धान्त
5) ओटो श्मिड की अन्तरतारक धूल परिकल्पना

पृथ्वी का भूगर्भिक इतिहास

1) प्रीकेम्ब्रियन शक
2) कैम्ब्रियन शक
3) आर्डोविशियन शक
4) सिलूरियन शक
5) डिवोनियन शक
6) कार्बोनिफेरस शक
7) पर्मियन शक
8) जुरैसिक शक
9) ट्रियासिक शक
10) क्रीटेशियस शक
11) इओसीन शक
12) ओलिगोसीन शक
13) मायोसीन शक
14) प्लायोसीन शक
15) प्लीस्टोसीन शक
16) होलोसीन शक

3.

मोबाइल : 9314618091

रजि. सं. 144 जयपुर 2008-09

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

पृथ्वी का आकार और उत्पत्ति

पृथ्वी का आकार गोल है। घुमाव के कारण पृथ्वी भौगोलिक ध्रुव मे चिपटा हुआ और भूमध्य रेखा के आसपास उभार लिया प्रतीत होता है। भूमध्य रेखा पर पृथ्वी का व्यास, ध्रुव से ध्रुव के व्यास से 43 Km (27 मील) ज्यादा बड़ा है।

पृथ्वी की आन्तरिक संरचना की बात करे तो सभी भूगोलवेत्ताओ ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये है। जिसमे से हम स्वेस के मत के बारे मे जानेंगे।

स्वेस का मत - (1831-1914). जर्मन विद्वान

स्वेस की पुस्तक = 'Das Antutzoder Erde' जिसमे पृथ्वी की संरचना के बारे मे बताया गया है। पुस्तक मे लिखा है कि पृथ्वी के ऊपर चारों ओर तलछटी चट्टानो की एक पतली परत है। तलछटी परत के नीचे मुख्य तीन परतो की कल्पना की है ⇒

1) सियाल 2) सीमा 3) निफे

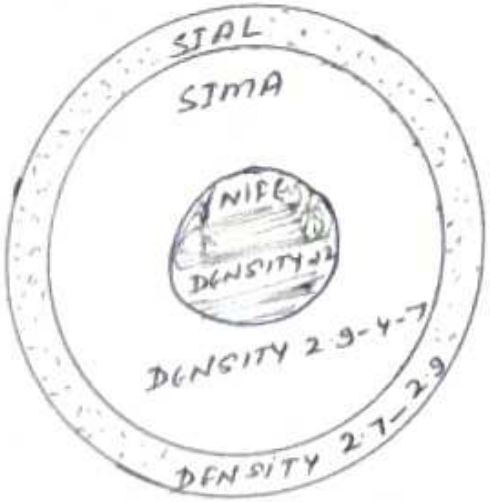

स्वेस के अनुसार

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

⑤

वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त

प्रवर्तक : प्रो. अल्फ्रेड वेगनर (1912)

विवेचन : 1915 - 1920 में हुआ।

- महासागरों की तली तथा महाद्वीपों की स्थिरता की संकल्पना को गलत प्रमाणित करने के लिए वेगनर ने अपनी प्रतिस्थापना परिकल्पना का प्रतिपादन किया।

दो रूप स्पष्ट :) 1) स्थल भाग स्थिर रहे तो जलवायु कटिबन्धों का स्थानान्तरण
2) जलवायु कटिबन्ध स्थिर तो स्थलभागों का स्थानान्तरण।

* सिद्धान्त का प्रधान रूप ⇒ नामकरण

सम्पूर्ण स्थल भाग :(पैंजिया) . पैंजिया का उत्तरी भाग :(लॉरेशिया)
जलभाग :(पैंथालासा), द. भाग = (गौंडवाना लैण्ड)

लॉरेशिया ⇒ उ. अमेरिका, यूरोप, एशिया
गौंडवानालैण्ड ⇒ द. अमेरिका, भारत (प्रायद्वीपीय) अफ्रीका, मेडागास्कर आस्ट्रेलिया, अण्टार्कटिका

पैंजिया तीन परतें
- ऊपरी परत (सियाल)
- मध्यवर्ती परत (सीमा)
- केन्द्र भाग (निफे)

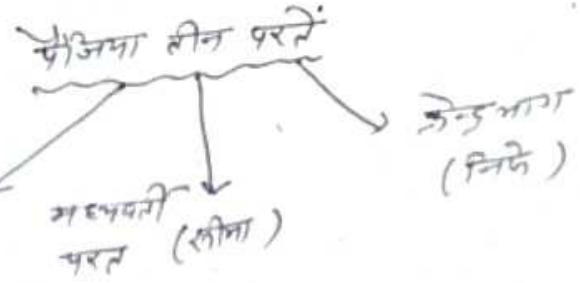

* सिद्धान्त के पक्ष में प्रमाण : भूगर्भिक बनावट, जलवायु तथा वनस्पतियों के वितरण आधार पर प्रमाण

1.) अटलांटिक महासागर के दोनों तटों में एकरूपता

5

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

2) अन्ध महासागर के कैलिडोनियन तथा हर्सीनियन पर्वत क्रमों के समानता

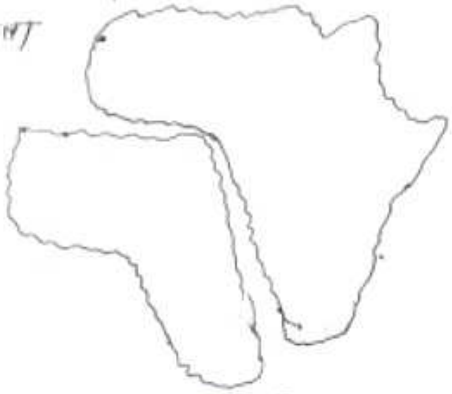

द. अमेरिका तथा अफ्रीका का पुनर्गठन

3. द. अमेरिका व अफ्रीका की तटीय संरचना का मिलना संभव।

प्लेट विवर्तनिकी | plate Tectonic Theory

प्लेट - 'स्थलीय दृढ भूखण्ड'

'प्लेटों के स्वभाव तथा प्रवाह से सम्बन्धित अध्ययन को प्लेट विवर्तनिकी कहते हैं।'

* प्लेट संकल्पना का प्रादुर्भाव दो तथ्यों के आधार पर -
  - (i) महाद्वीपीय प्रवाह की संकल्पना
  - (ii) सागर तली के प्रसार की संकल्पना

प्लेट विवर्तनिकी के विभिन्न पक्षों का आरेखीय प्रदर्शन

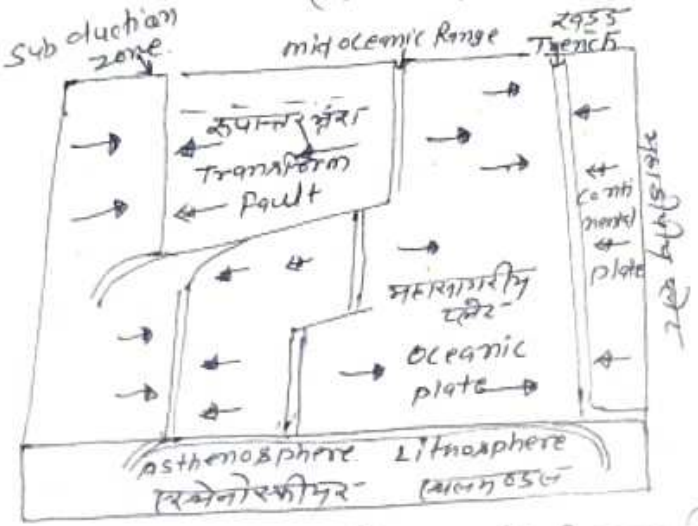

6.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

समस्थिति

संतुलन अर्थ :) 'परिभ्रमण करती हुई पृथ्वी के ऊपर स्थित होने (पर्वत पठार मैदान) एवं गहराई मे स्थित होने (झील समुद्र आदि) भौतिक अथवा यान्त्रिक स्थिरता की दशा को ही संतुलन की दशा कहते है।'

आइसोस्टेसी - Isostasious आइसोस्टेसियस (ग्रीक) शब्द से बना।

└→ समस्थिति

शब्द प्रयोग - भूगोलवेत्ता डटन द्वारा (अमेरिका) 1869 मे

* शब्दो का प्रयोग - समदाब तल / सम तल / क्षतिपूर्ति तल

☆ संतुलन सिद्धान्त प्रतिपादन के लिए निम्न संकल्पनाएँ ⇒

1. सर जार्ज एयरी की संकल्पना

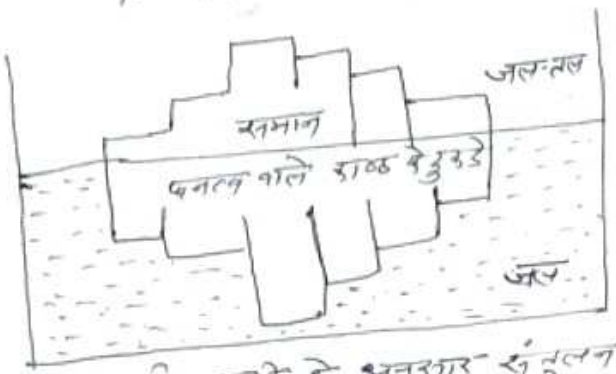

सर जार्ज एयरी के अनुसार संतुलन स्थिति

2. प्राट की संकल्पना

संतुलन की स्थिति

7.

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण

सूर्यग्रहण ⇒ पृथ्वी व सूर्य के बीच चन्द्रमा के आ जाने से सूर्यग्रहण की स्थिति बनती है।

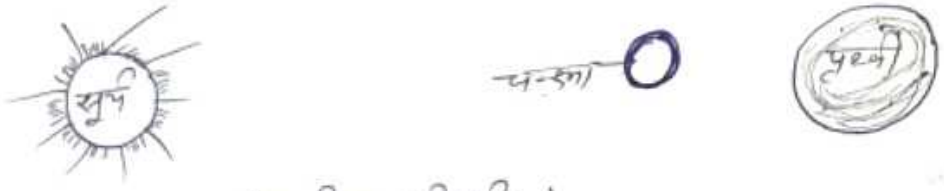

(सूर्यग्रहण स्थिति)

चन्द्रग्रहण ⇒ पृथ्वी, सूर्य व चन्द्रमा के बीच आ जाने से चन्द्रग्रहण की स्थिति बनती है। पूर्णिमा के दिन ऐसी स्थिति बनती है।

(चन्द्रग्रहण स्थिति)

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

UNIT-2

पर्वत निर्माण के सिद्धान्त
mountain Building principles

पर्वत द्वितीय श्रेणी के उच्चावच, पर्वत वह उच्च स्थान जो समीपवर्ती स्थानो से 500 मी ऊंचा हो।

पर्वत के रूप => पर्वत, कटक, पर्वत श्रेणी, पर्वत शृंखला, पर्वत तंत्र
पर्वत वर्ग, पर्वत समूह, पर्वत शिखर आदि

पर्वत

- मौलिक पर्वत
  - वलित पर्वत (Folded Mountain) (सम्पीडन शक्ति द्वारा निर्मित)
  - अवरोधी या ब्लॉक पर्वत (block mountain) (तनाव शक्ति के द्वारा निर्मित
  - गुम्बदाकार पर्वत (dome mountain) (ज्वालामुखी क्रिया तथा स्थल मे उभार के कारण)
  - संग्रहीत पर्वत (mountain of accumulation) (ज्वालामुखी निस्सृत पदार्थों के जमाव से)
- अवशिष्ट पर्वत

1. कोबर का पर्वत निर्माण सिद्धान्त (Geosynclinal Orogen Theory of Kober)

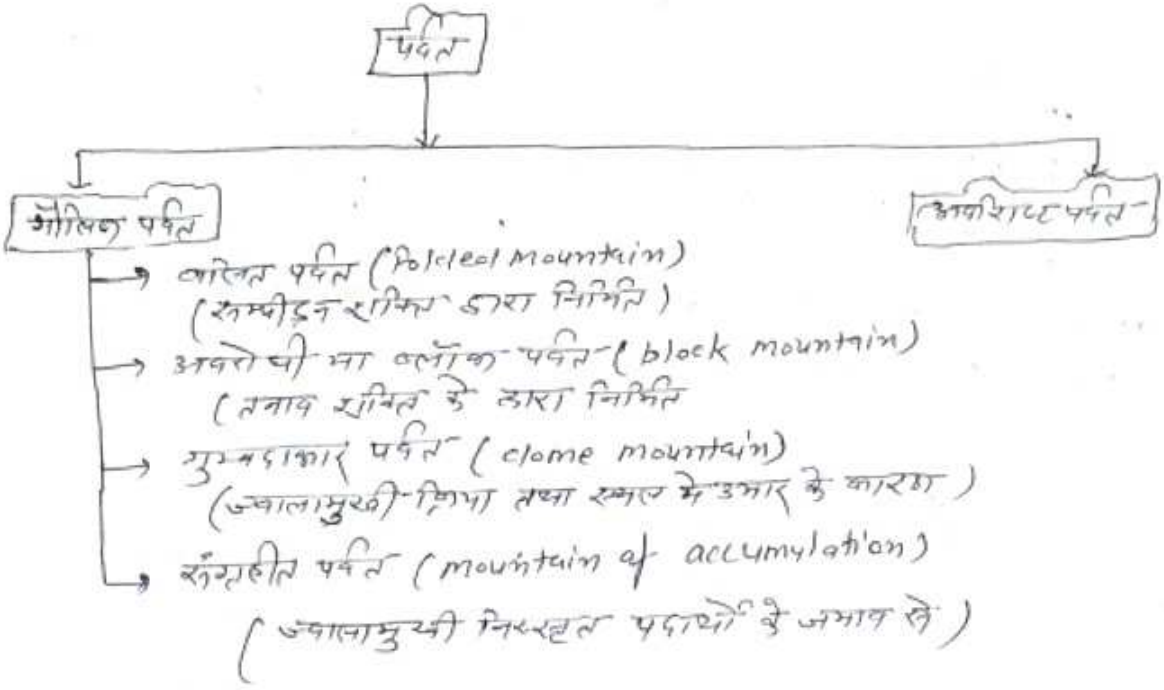

(भूसन्नति सिद्धान्त)

मुख्य शब्द => पर्वत निर्माण स्थल, अवसादीकरण, अवतलन की क्रिया, स्वानिराश्मी, मध्य पिण्ड, विशिष्ट मध्य पिण्ड
रेण्डकेन, पर्वत निर्माण की अवस्था

भूसन्नति सिद्धान्त का ब्लॉक डायग्राम

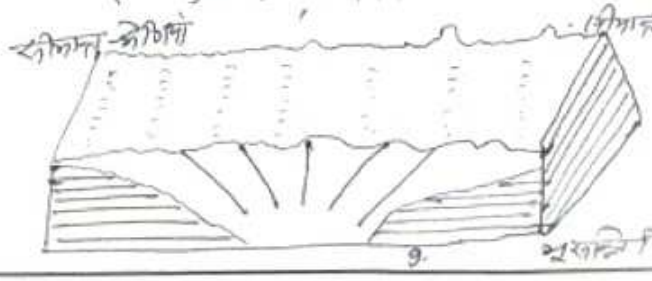

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

मुख्य उदा॰ =) टारस तथा पांडटस श्रेणियों के मध्य आनातोलिया पठार, एल्बुर्ज व जेग्रोस पर्वत के बीच ईरान का पठार, हिमालय तथा कुनलुन के बीच तिब्बत का पठार आदि

हिमालय तथा कुनलुन पर्वतों का पार्श्व चित्र तथा कोबर के मध्य पिण्ड सिद्धान्त (तिब्बत के पठार) का स्पष्टीकरण

भूसंचलन Earth movements

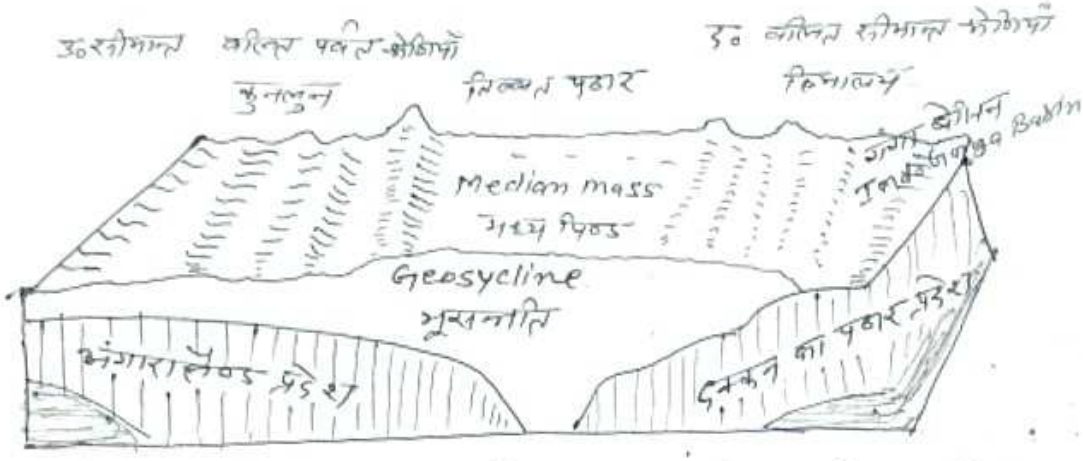

भूतल पर परिवर्तन लाने के लिए दो प्रकार के बलों का प्रयोग :→

1) अन्तर्जात बल (Endogentic Force)
2) बहिर्जात बल

1) अन्तर्जात बल - पृथ्वी में दो संचलन

- लम्बवत् संचलन
- क्षैतिज संचलन

* तीव्रता के आधार पर संचलन
- 1. आकस्मिक संचलन
- 2. पटल विरूपणी संचलन

भूतल पर तरह-तरह के उच्चावचों का निर्माण एवं विकास होता है। भूकम्प, ज्वालामुखी अन्तर्जात बल की ही परिणामिका है। शैलों में संकुचन भूगर्भ तापीय अंतर के कारण ही होता है। तापीय अंतर के कारण फैलाव व संकुचन होता है।

10.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

स्थलरूपों के प्रभावित करने वाले बलों का विभाजन

- बल (Force)
  - अन्तर्जनित बल (Endogentic Force)
    - पटल विरूपणी बल (diastrophic Force)
      - महादेशजनक बल (Epeirogentic Force)
        - उपरिमुखी बल (Upward Force) निर्गमन (Emergence)
        - अधोमुखी बल (downward Force) निमज्जन (Submergence)
      - पर्वत निर्माणकारी बल (orogentic Force)
        - तनाव (Tension)
          - भूपटल विभंग (crustal fracture)
            - चटकन (cracking)
            - भ्रंशन Faulting
        - सम्पीडन (compression)
          - भूपटल बंकन (मुड़ना) (crustal bending)
            - संवलन (warping)
              - उपसंवलन (upwarping)
              - अधःसंवलन (downwarping)
            - वलन (Folding)
    - आकस्मिक अन्तर्जात बल (Sudden Endogenetic Force)
  - बहिर्जात बल (Exogentic Force)
    - अनाच्छादन (denudation)
      - अपक्षय (weathering)
      - अपरदन (Erosion)
        - बहता जल
        - पवन
        - हिमनद
        - सागरीय तरंगें
        - परिहिमानी

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोसियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

भ्रंश - Fault

तल के सहारे भूपटल की चट्टानों में खण्डों का स्थानान्तरण होता है उसे विभंग तल या भ्रंश तल कहते हैं।

पारिभाषिक शब्द -
1. विभंग तल या भ्रंश तल
2. भ्रंश नति
3. उत्क्षेपित खण्ड
4. अधः क्षेपित खण्ड
5. शीर्ष भित्ति
6. पाद भित्ति
7. भ्रंश कगार

भ्रंश के प्रकार ⇒
- → सामान्य भ्रंश
- → व्युत्क्रम भ्रंश
- → पार्श्विक या नतिलम्बी सर्पण भ्रंश
- → सोपानी भ्रंश

वलन Folds

मुख्य भाग → अपनति, अभिनति, नति, नमन या डिप, नतिलम्ब, समपनति, समअभिनति...

वलन के प्रकार ⇒
1. सममित वलन (symmetrical Folds)
2. असममित वलन (asymmetrical Folds)
3. एकदिग्नत वलन (monoclinal Folds)
4. समनत वलन (isoclinal Folds)
5. परिवलित (शयान) वलन (Recumbent Folds)
6. प्रतिवलन (overturned Folds)
7. अवनमन वलन (plunging Folds)
8. पंखा वलन (Fan Folds)
9. खुला वलन (open Folds)
10. बन्द वलन (closed Folds)

12.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

आकस्मिक आन्तरिक बल - भूकम्प एवं ज्वालामुखी

ज्वालामुखी का उद्गार तथा इससे निकलने वाले पदार्थों के बाहर प्रकट होने की प्रक्रिया को 'ज्वालामुखी के प्रकट होने की क्रिया' कहते हैं।

ज्वालामुखी क्रिया के दो रूप
- आभ्यान्तरिक
- बाह्य

★ लावा के प्रकार
1. अम्ल प्रधान लावा या एसिड लावा
2. पैठिक लावा या बेसिक लावा

ज्वालामुखी अंग - ज्वालामुखी पर्वत, ज्वालामुखी छिद्र, ज्वालामुखी नली, ज्वालामुखी का मुख, काल्डेरा।

ज्वालामुखी के प्रकार

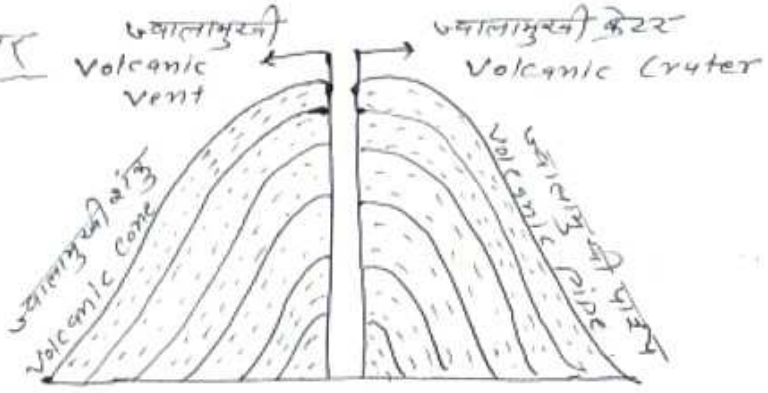

ज्वालामुखी अंग

* उद्गार के अनुसार वर्गीकरण ⇒

(अ) केन्द्रीय उद्भेदन वाले ज्वालामुखी (Central Eruption type)

1) हवाइयन तुल्य ज्वालामुखी
2) स्ट्राम्बोली ''
3) वल्कैनो ''
4) विसुवियस
5) पीलियन

(ब) दरारी उद्भेदन वाले ज्वालामुखी

13.

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

2) उद्गार की अवधि के अनुसार

1. सक्रिय या जाग्रत ज्वालामुखी (active Volcano)
2. प्रसुप्त ज्वालामुखी (dormant Volcano)
3. शान्त ज्वालामुखी (extinct Volcano)

भूकम्प (earthquakes)

जब अचानक बाह्य अथवा आन्तरिक कारणों से पृथ्वी के भूपटल में तीव्र गति से कम्पन पैदा हो जाता है, उसे 'भूकम्प' कहते हैं।

भूकम्प के कारण ⇒

1. ज्वालामुखी क्रिया
2. भूपटल भ्रंश
3. भूसन्तुलन की अव्यवस्था
4. जलीय भार
5. भूपटल में सिकुड़न
6. गैसों का फैलाव

* शैल: उनके प्रकार और विशेषताएँ *

शैल = कठोर या दृढ़ भाग

चट्टान वर्गीकरण

- बनावट की प्रक्रिया
  - आग्नेय शैल
  - अवसादी शैल
  - रूपान्तरित शैल
- सामान्य विभाजन
  - रवेदार शैल
    - आग्नेय शैल
    - रूपान्तरित शैल
  - रेतमुक्त शैल
    - अवसादी शैल

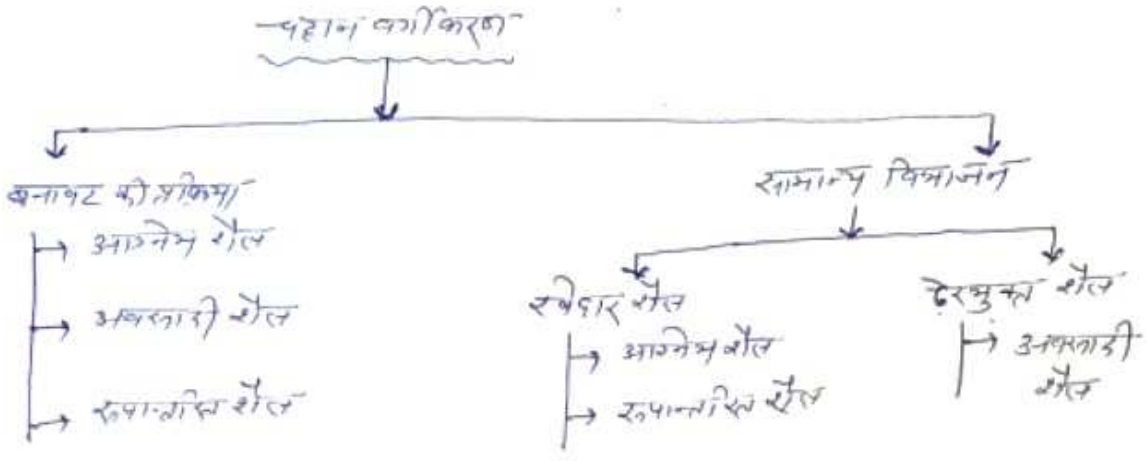

रजि. नं. ...
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर -305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

अनाच्छादन या अनाशीलकरण (Denudation)

अनाच्छादन क्रिया बाह्य शक्तियों द्वारा सम्पन्न दो प्रकार से =)

- स्थिर शक्ति (चट्टानों का विखंडन व वियोजन)
- अस्थिर शक्ति के रूप में। (चट्टानों का स्थान परिवर्तन या कटना)

स्थिर शक्तियों द्वारा (अपक्षय)
(weathering through static Force)
Heat, water, Forest, Animal, Vegetation
Hydration, Oxidation, Carbonation

अस्थिर शक्तियों द्वारा (अपरदन)
(Erosion through Dynamic Force)
River, wind, Glacier)

अपक्षय (weathering)

- (क) भौतिक / यांत्रिक अपक्षय
  - ताप
  - पाला
  - वर्षा
  - दाब मुक्ति
  - वायु
- (ख) रासायनिक अपक्षय
  - ऑक्सीकरण
  - कार्बोनेशन
  - हाइड्रेशन
- (ग) प्राणीजगीय अपक्षय

* अपक्षय को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ =) गुरुत्वाकर्षण बल, चट्टानी संरचना, ढाल, चट्टानी कोर, विषम जलवायु, वनस्पति।

रजि. नं. ... मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

अपरदन चक्र की संकल्पना (डेविस)

जेम्स हटन : "न तो आदि का कोई पता है और न अंत का कोई औचित्य"

विलियम मोरिस डेविस (W. M. Davis) - अमेरिकी विद्वान, 1899 में भौगोलिक चक्र की संकल्पना प्रस्तुत की।

डेविस ने लिखा " स्थलरूप संरचना, प्रक्रम और समय (अवस्था) का प्रतिफल होता है।" (A Landscape is a function of structure process and time (stage)

* डेविस की परिकल्पना में मुख्य शब्द →
  - संरचना (structure)
  - प्रक्रम (process)
  - अवस्था (stage)

* संकल्पना की व्याख्या के तीन अवस्थाएं => (1) प्रथमावस्था
  (2) द्वितीयावस्था
  (3) तृतीयावस्था

डेविस ग्राफ

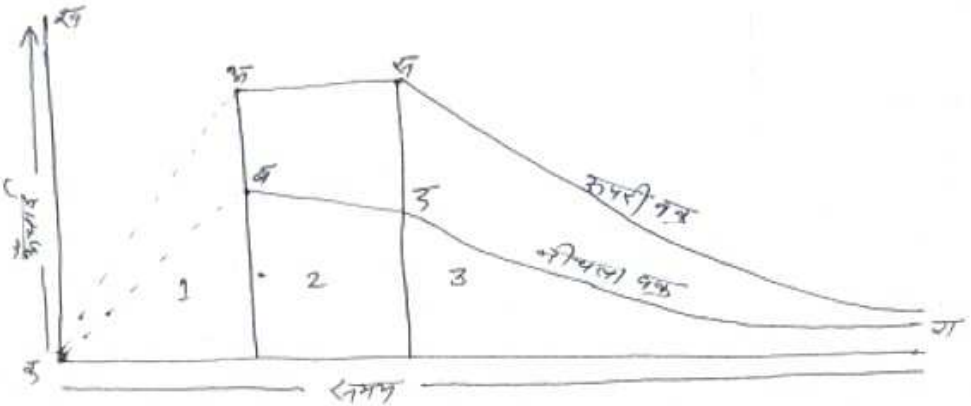

डेविस के भौगोलिक चक्र का रैखिक प्रदर्शन

रजि. नं. 144/जयपुर 1998-99 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* पेंक की संकल्पना (Erosional Concept of walthear penck)

पेंक - यूरोपीय (जर्मन) विद्वान
डेविस के भौगोलिक चक्र का विरोध

" भू-आकृतियाँ उत्थान की प्रावस्था एवं दर (phase and rate of uplift और निम्नीकरण (Degradation) के पारस्परिक सम्बन्धों का प्रतिफल होती है।

- पेंक द्वारा पांच दशाओं (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम) का वर्णन

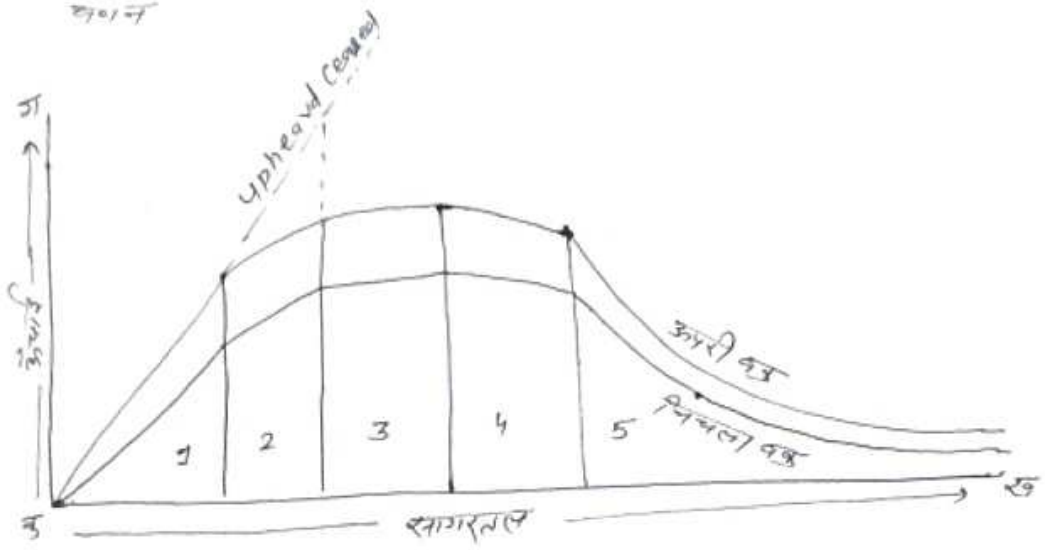

* नदी (जल) के कार्य तथा उत्पन्न स्थलाकृतियाँ *

नदी अपरदन के रूप

① घोलीकरण या संक्षारण (solution or corrosion)

② अपघर्षण (corrasion or abrasion)

③ सन्निघर्षण (attrition)

④ जलगति क्रिया (hydraulic action)

पंजीकरण सं. ...
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* आधार तल ⇒
  - → सामान्य या चरम का स्थायी आधार तल
  - → अस्थायी आधार तल
  - → स्थानीय आधार तल

* नदी परिवहन कार्य ⇒
  - → कर्षण द्वारा (लुढ़कर - by traction)
  - → उत्परिवर्तन द्वारा (by saltation)
  - → लटककर (by suspension)
  - → घुलकर (by solution)

* अपरदन द्वारा उत्पन्न स्थलरूप *

1. नदी घाटी का विकास
   - i) घाटी का गहरा होना (गार्ज या कैनियन)
   - ii) घाटी का चौड़ा होना (नदी विसर्प का निर्माण)
   - iii) घाटी का लम्बा होना
   - iv) सरिता अपहरण तथा उससे उत्पन्न स्थलरूप

2. जल प्रपात का निर्माण
3. जलगर्तिका (pot hole)
4. संरचनात्मक सोपान (structural bench)
5. नदी वेदिका (river terrace)
6. नदी विसर्प (meander)
7. कुएस्टा या शूकर कटक (Cuesta & hogback)
8. समप्राय मैदान (peneplain)

* नदी का निक्षेपण कार्य (Depositional work of stream)

[कारण] → 1. नदी के वेग में कमी
2. नदी में बोझ (अवसाद भार) की वृद्धि

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

*निक्षेप द्वारा उत्पन्न स्थलरूप ⇒
1. जलोढ़ पंख (alluvial fans)
2. जलोढ़ शंकु (alluvial cones)
3. बालुका पुलिन या बालुका तट (sand bank)
4. प्राकृतिक तटबन्ध (natural levees)
5. बाढ़ का मैदान (flood plains)
6. डेल्टा (delta)

डेल्टा का वर्गीकरण - 1. आकृति के अनुसार डेल्टा वर्गीकरण
i) चापाकार डेल्टा (arcuate delta)
ii) पंजाकार डेल्टा (bird-foot delta)
iii) ज्वारनदमुखी डेल्टा (estuarine delta)
iv) खण्डित डेल्टा (truncated delta)
v) पालियुक्त डेल्टा या क्षीणाकार डेल्टा (lobate delta)

2) विस्तार के अनुसार डेल्टा विभाजन
i) वर्द्धमान डेल्टा
ii) अवरोधित डेल्टा

* भूमिगत जल के कार्य तथा उत्पन्न स्थलाकृति (कार्स्ट स्थलाकृति) *
The work of Groundwater & Resultant Topography

* भूमिगत जल के कार्य - अपरदनात्मक कार्य →
(1) घुलन क्रिया (solution)
(2) जलगति क्रिया (hydraulic action)
(3) अपघर्षण (corrasion or abrasion)
(4) सन्निघर्षण (attrition)

* कार्स्ट स्थलाकृतियों के अपरदनात्मक स्थलरूप
1. लैपीज

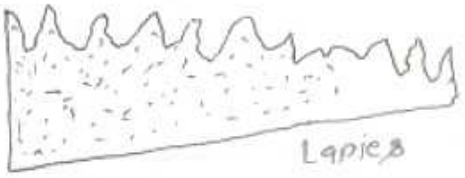

Lapies

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

UNIT- 3

(ATMOSPHERE)

✱ वायुमण्डल का संगठन और स्तरीकरण ✱

वायुमण्डल = सौ km की मोटाई में व्याप्त गैसीय आवरण

वायुमण्डल संगठन में गैसीय आवरण =
78%	: नाइट्रोजन
21%	: आक्सीजन
1%	: अन्य गैसे

⇒ वायुमण्डल का स्तरीकरण (stratification of the Atmosphere)

1. क्षोभमण्डल (Troposphere) (परिवर्तन) संवहनीय / विक्षोभ मण्डल
2. समताप मण्डल (stratosphere) ↳ ओजोन मण्डल
3. मध्यमण्डल (mesosphere)
4. तापमण्डल (Thermosphere) ↳ आयन मण्डल ↳ आयतन मण्डल

रजि. नं. 141/जय/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

घोल रन्ध्र से सम्बन्धित रूप - घुलन क्रिया के कारण विस्तृत रंध्र
→ डोलाइन

- कार्स्ट खिड़की

- युवाला

- पोलिजे

* कार्स्ट प्रदेश की घाटियाँ ⇒ ① धँसती निवेशिका (sinking creek)
② अन्धी घाटी (Blind valley)
③ कार्स्ट घाटी या घोल घाटी

निक्षेपात्मक स्थलरूप (Depositional landforms)

- स्टेलेक्टाइट
- स्टेलेग्माइट
- कन्दरा स्तम्भ

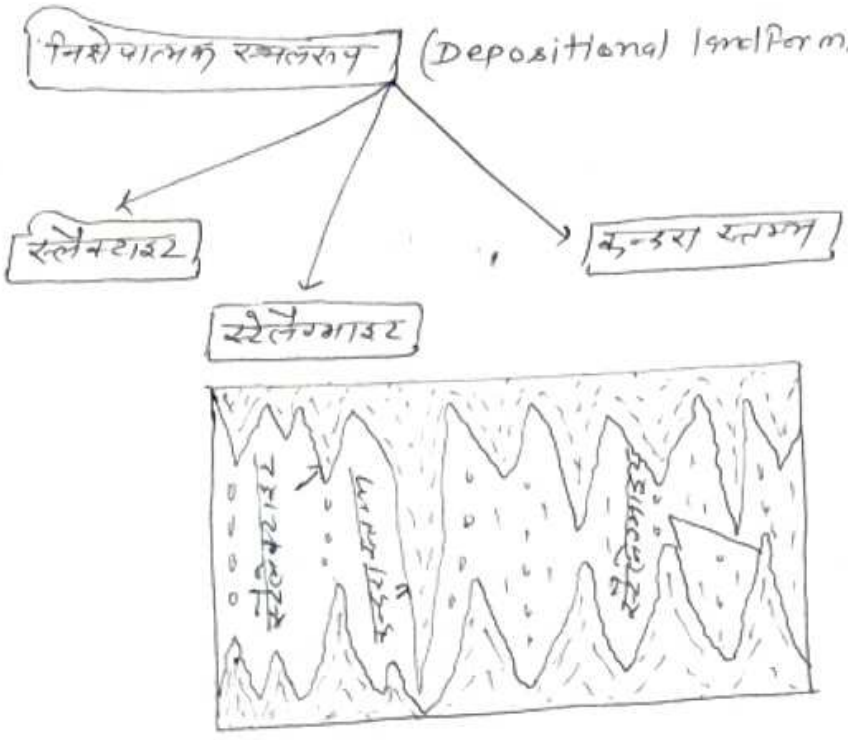

स्टेलेक्टाइट तथा स्टेलेग्माइट का निर्माण

रजि. नं. 111/जय/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर - 305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* सूर्यातप (Insolation) *

सौर्यिक ऊर्जा = सूर्यातप

* धरातल पर सूर्यातप का वितरण ⇒ सूर्यातप का अंक्षाशीय मण्डल
(अ) निम्न अंक्षाशीय या उष्णकटिबंधीय मण्डल
(ब) मध्य अंक्षाशीय मण्डल
(स) ध्रुवीय मण्डल

⊙ सूर्यातप के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक ⇒
1. सूर्य की किरणों का सापेक्ष्य तिरछापन

2. दिन की अवधि
3. पृथ्वी से सूर्य की दूरी

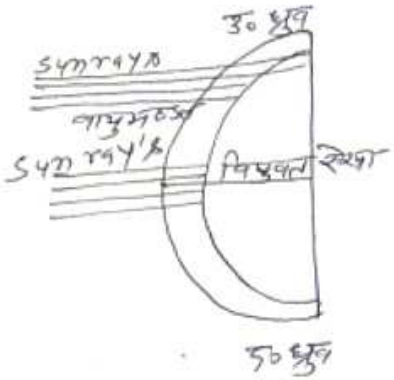

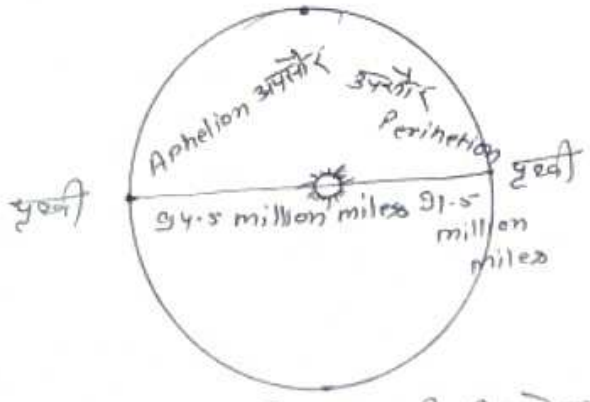

सूर्य तथा पृथ्वी की सापेक्ष स्थिति

पंजी. नं. ... जयपुर 1996-97 मोबाइल: 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ
(संचालित श्री सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

4. सौर कलंक

5. वायुमण्डल का प्रभाव

* Temperature तापमान *

वायुमण्डल सूर्य तथा पृथ्वी से अलग अलग रूपो मे ताप ग्रहण करता है। तथा उसका विसर्जन करता है। वायुमण्डल के गर्म तथा शीतल होने की क्रियाएं मुख्य रूप से सौर्यिक विकिरण से प्राप्त ऊर्जा द्वारा पृथ्वी से परिचालन (conduction) संवहन (Convection) तथा विकिरण (radiation) की क्रियाओ से सम्पादित होती है।

- प्रत्यक्ष सूर्यातप से वायुमण्डल का गर्म होना
- परिचालन (conduction)
- विकिरण (Radiation)
- संवहन (convection)

* तापमान का वितरण →
1. अंक्षाश
2. सागर तल से ऊंचाई
3. सागर से दूरी
4. स्थल एवं जल का स्वभाव
5. धरातल के गुण
6. ढाल का स्वभाव
7. प्रचलित पवन
8. सागरीय धाराएँ

✩ तापमान का प्रतिलोमन (Inversion of Temperature)

तापीय प्रतिलोमन के प्रकार

① उअब्बाही प्रतिलोमन - (i) धरातलीय प्रतिलोमन
(ii) उच्च वायुमण्डलीय प्रतिलोमन

② अभिवहनीय या सम्पर्कीय प्रतिलोमन

③ यांत्रिक प्रतिलोमन

रजि. नं. ... जयपुर ...

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* वायुदाब *

सागर तल पर समान वायुदाब वाले क्षेत्रों को मिलाने वाली रेखा - 'समदाब रेखा'

- वायुदाब पेटियाँ (Pressure Belts)

1. भूमध्य रेखीय निम्न वायुदाब की पेटी
2. उपोष्ण उच्च वायुदाब पेटी
3. उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटी
4. ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटी

पवन → वर्गीकरण

1. स्थायी, सनातनी या ग्रहीय पवनें (व्यापारिक, पछुआ, ध्रुवीय)
2. अश्व अक्षांश तथा पछुवा हवायें
3. ध्रुवीय हवायें

→ स्थलीय तथा सागरीय समीर
→ पर्वत तथा घाटी समीर
→ स्थानीय पवनें - चिनूक तथा फॉन, सिराको, हरमट्टन, मिस्ट्रल, बोरा, ब्लिजर्ड, लू, अन्य

जेट स्ट्रीम

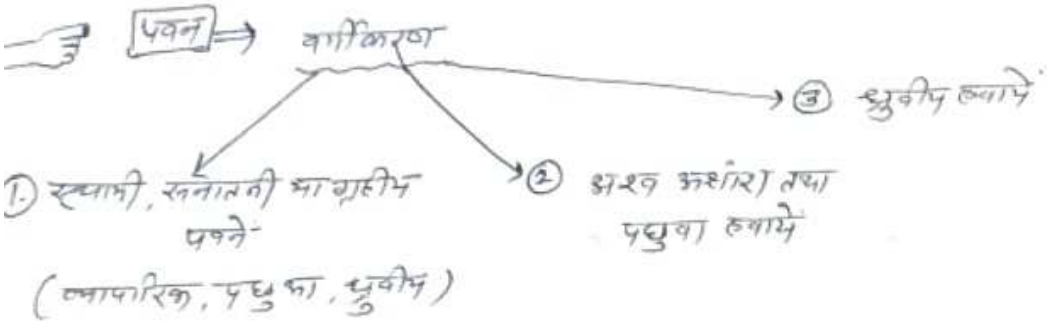

→ संचरण - क्षोभमण्डल में पश्चिम से पूर्व दिशा में
→ लम्बाई हजारों Km. चौ. सैकड़ों तथा गहराई कुछ Km
→ संचार दोनों गोलार्द्धों में ध्रुवों के चारों
→ मार्ग विसर्पित
→ पवन वेग में मौसमी परिवर्तन

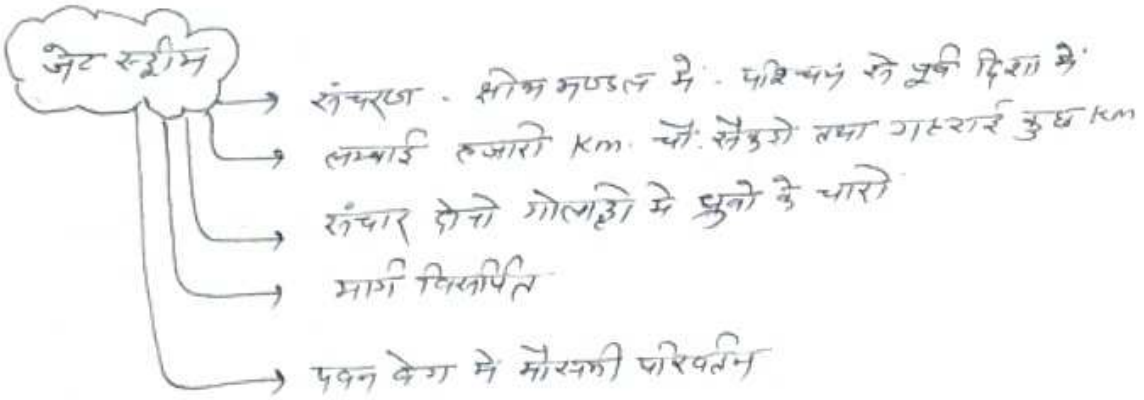

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

जेट स्ट्रीम के प्रकार

① ध्रुवीय वाताग्र जेट स्ट्रीम

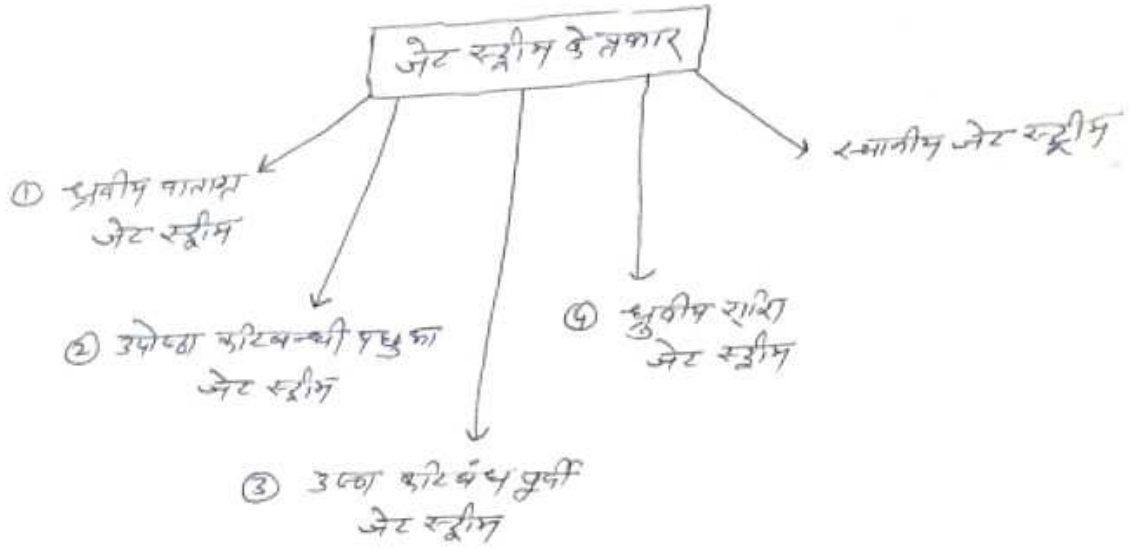

② उपोष्ण कटिबन्धीय पछुआ जेट स्ट्रीम

③ उष्ण कटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम

④ ध्रुवीय रात्रि जेट स्ट्रीम

स्थानीय जेट स्ट्रीम

* जेट स्ट्रीम का विकास चक्र => - प्रथमावस्था, द्वितीयावस्था, तृतीयावस्था, चतुर्थावस्था

* जेट स्ट्रीम का महत्व

* वायुराशि *

। ऊंचाई पर क्षैतिज रूप में तापमान तथा आर्द्रता सम्बन्धी समानताएं, वायुराशि का उद्भव स्थान जहां होता है, वायुराशि का उत्पत्ति क्षेत्र या उद्गम क्षेत्र कहते है।

वायुराशि वर्गीकरण

- भौगोलिक वर्गीकरण - 1. उष्ण कटिबन्धीय वायुराशि → महाद्वीपीय उ.क.
  → महासागरीय उ.क.
  2. ध्रुवीय वायुराशि → महाद्वीपीय
  → सागरीय

- उत्पत्तिक वर्गीकरण - 1. ठण्डी वायुराशि
  2. गर्म वायुराशि → महाद्वीपीय गर्म वायुराशि
  → महासागरीय " "

25.

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* वाताग्र *
Frontal

दो विपरीत स्वभाव वाली हवाएँ मिलकर बलुआ सीमा बनाते हैं, जब अभिसरण (converge) करने वाली हवाओं के बीच में विस्तृत संक्रमणीय रह जाता है उसे 'वाताग्र' (Frontal zone) प्रदेश कहते हैं।

* वाताग्र की उत्पत्ति के लिए आवश्यक दशाएँ :-
  1. विपरीत तापमान
  2. वायुराशियों की विपरीत दिशा
     - → स्थानान्तरणी प्रवाह (translatory circulation)
     - → घूर्णन प्रवाह (Rotary circulation)
     - → अभिसरण तथा अपसरण
     - → विरूपणी पवन प्रवाह

* वाताग्र का वर्गीकरण ⇒ 1. उष्ण वाताग्र 2. शीत वाताग्र 3. अधिविष्ट वाताग्र 4. स्थायी वाताग्र

* वाताग्र प्रदेश => 1. ध्रुवीय वाताग्र प्रदेश 2. आर्कटिक वाताग्र प्रदेश 3. अन्तरा उष्ण कटिबंधीय वाताग्र प्रदेश

* चक्रवात (cyclones) *

1. शीतोष्ण कटिबन्धीय चक्रवात
2. उष्ण कटिबंधीय चक्रवात

1. शीतोष्ण कटिबन्धीय चक्रवात (Temperate Cyclones)

Types — ① गतिक चक्रवात (dynamic cyclone)
② तापीय चक्रवात (Thamal cyclone)
③ उप चक्रवात (Secondry cyclone)

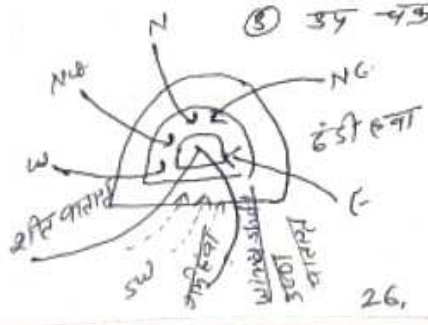

26,

[illegible]
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

② उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात (Tropical Cyclone)

- कर्क तथा मकर रेखाओं के मध्य उत्पन्न चक्रवातों को उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात

प्रकार
- → उष्ण कटिबन्धीय विक्षोभ
- → उष्ण कटिबन्धीय अवदाब
- → उष्ण कटिबन्धीय तूफान
- → हरिकेन या टाइफून

** कोपेन का जलवायु वर्गीकरण **

classification of climate according to Koppen's

व्लादिमिर कोपेन = 1918 (प्रस्तुतीकरण)
- वनस्पति मण्डल के आधार पर वर्गीकरण
- विश्व की जलवायु को 5 भागों में विभक्त

A, B, C, D, E

(A) = शीत ऋतु रहित उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र जलवायु

(B) = शुष्क जलवायु

(C) = सामान्य शीत ऋतु युक्त मध्य अक्षांशीय आर्द्र जलवायु
(उष्णार्द्र समशीतोष्ण जलवायु)

(D) = मध्य अक्षांशीय शीतार्द्र जलवायु

(E) = ध्रुवीय जलवायु

अन्य अक्षर =)

f = वर्ष भर वर्षा
s = ग्रीष्म काल शुष्क
w = शीतकाल शुष्क

S - अर्द्धशुष्क या स्टेपी जलवायु
W - शुष्क जलवायु

रजि. नं. 144/जयपुर 2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* * महासागरीय नितल के उच्चावच * *

ग्लोब के लगभग $\frac{1}{3}$ भाग पर जलमण्डल का विस्तार है।

- ⊙ महाद्वीपीय मग्नतट (continental shelves)
- ⊙ महाद्वीपीय मग्न ढाल (continental slope)
- ⊙ गहरे सागरीय मैदान (Deep sea plains)
- ⊙ महासागरीय गर्त (Oceanic Deeps)
- ⊙ अन्तः सागरीय कन्दरा (Submarine Canyons)

अन्ध महासागर का नितल उच्चावच

- परिचय
- महाद्वीपीय मग्नतट
- मध्य अटलांटिक कटक
- द्रोणी
- महासागरीय गर्त
- सीमान्त सागर

अन्धमहा० के नितल उच्चावच 28.

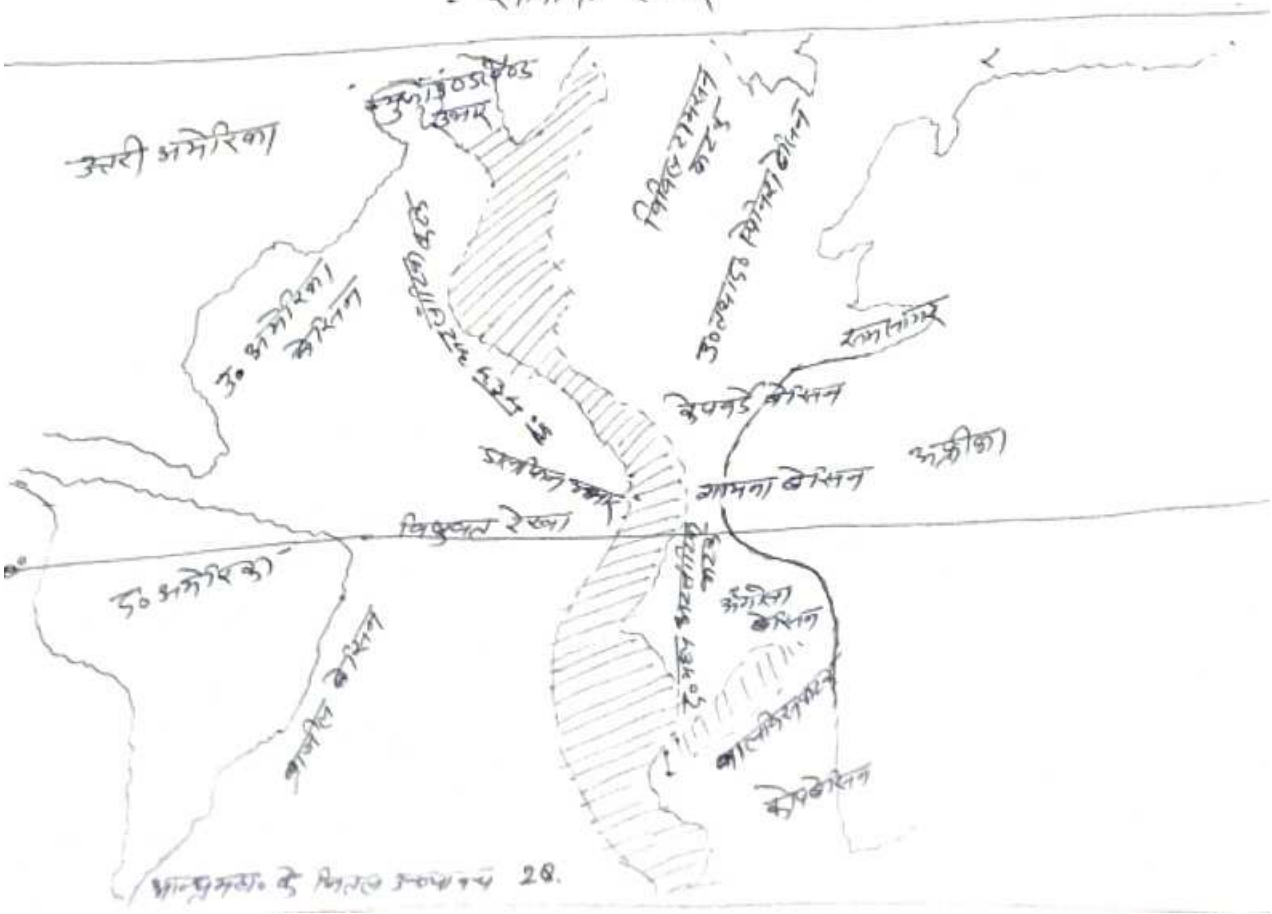

पं. क्र. ...

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

** महासागरीय जल का तापमान **
(Temperature of the Oceans)

- परिचय
- दैनिक तापान्तर
- वार्षिक तापान्तर
- तापमान का वितरण => (i) अंक्षांश
  (ii) जल एवं स्थल के वितरण में असमानता
  (iii) प्रचलित पवनें
  (iv) सागरीय धारायें
  (v) अन्य कारक

- महासागरीय तापक्रम का क्षैतिज वितरण
- महासागरीय तापक्रम का लम्बवत् वितरण

सागरीय लवणता (Salinity)

"सागरीय जल भार एवं उसमें घुले हुए पदार्थों के भार के अनुपात को सागरीय लवणता कहते हैं।"

- सागरीय जल का संघठन
- सागरीय लवण के स्त्रोत
- सागरीय लवणता के नियंत्रक कारक - ① वाष्पीकरण
  ② वर्षा द्वारा जलापूर्ति
  ③ नदी के जल का आगमन
  ④ वायुदाब तथा वायु दिशा
  ⑤ सागरीय गतियाँ

लवणता वितरण → 1 क्षैतिज वितरण → (क) अंक्षांशीय (ख) प्रादेशिक
→ 2. लम्बवत् वितरण

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* ज्वारभाटा Tides *

सूर्य तथा चन्द्रमा की आकर्षण शक्तियों के कारण सागरीय जल के ऊपर उठने तथा गिरने को ज्वार भाटा कहते हैं।

ज्वार की उत्पत्ति =)

चन्द्रमा का अण्डाकार परिभ्रमण कक्षा

गुरुत्वाकर्षण बल, एवं ज्वार उत्पादक बल

ज्वार के प्रकार
- पूर्ण या दीर्घ ज्वार
- लघु ज्वार
- अयनवृत्तीय या भूमध्यरेखीय
- अपभू तथा उपभू ज्वार
- दैनिक ज्वार
- अर्द्धदैनिक ज्वार
- मिश्रित ज्वार

प्रवाल भित्तियाँ Reef
- (Fringing Reef) तटीय प्रवाल भित्ति
- (Barrier Reef) अवरोधक प्रवाल भित्ति
- (Atoll) एटोल प्रवाल भित्ति

30.

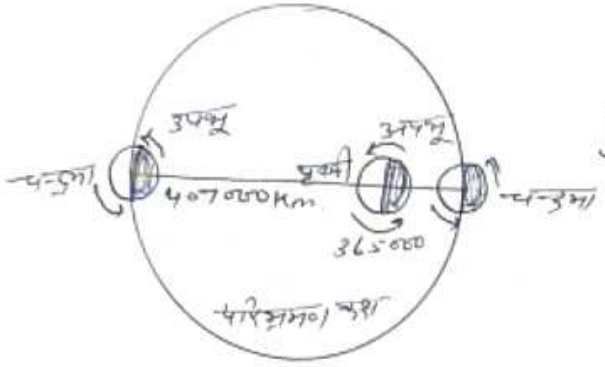

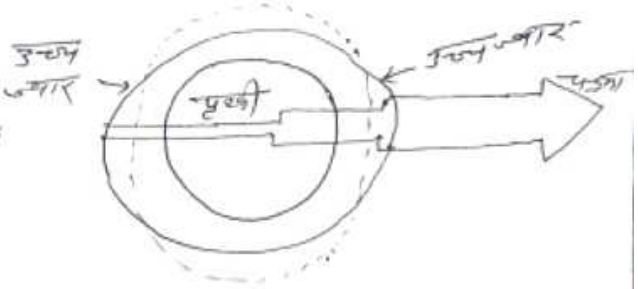

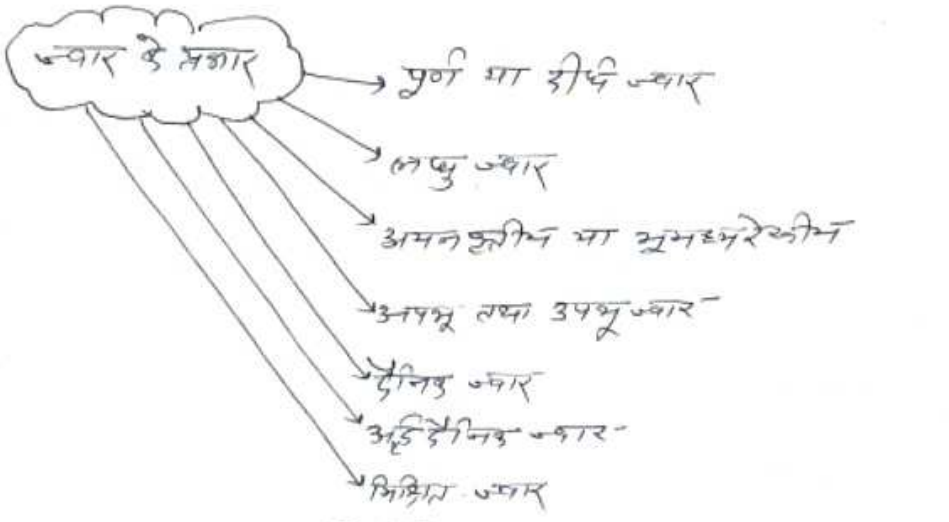

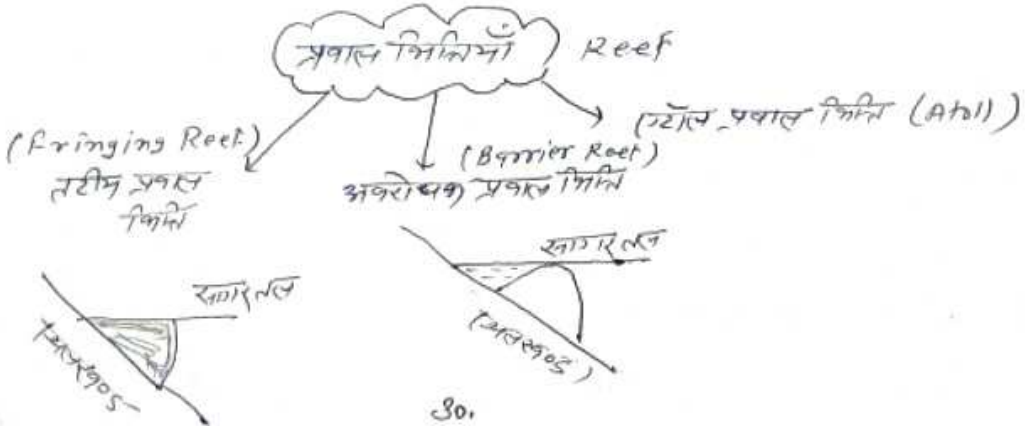

रजि. नं. [illegible]
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* * महासागरीय धाराएँ * *

Ocean Currents

धारा के प्रकार → i) प्रवाह ii) धारा iii) विशाल धारा

* धाराओं की उत्पत्ति : (अ) पृथ्वी के परिभ्रमण से सम्बन्धित कारक
  (ब) सागर से सम्बन्धित कारक
  1) तापमान में भिन्नता
  2) लवणता में भिन्नता
  3) घनत्व में भिन्नता
  (स) बाह्य सागरीय कारक
  1) वायुदाब तथा हवाएं
  2) वाष्पीकरण तथा वर्षा

* धाराओं की दिशाओं में परिवर्तन लाने वाले कारक
  → तट की दिशा तथा आकार
  → तलीय आकृतियाँ
  → मौसमी परिवर्तन
  → पृथ्वी का परिभ्रमण

☆ प्रशान्त महासागर की धाराएँ

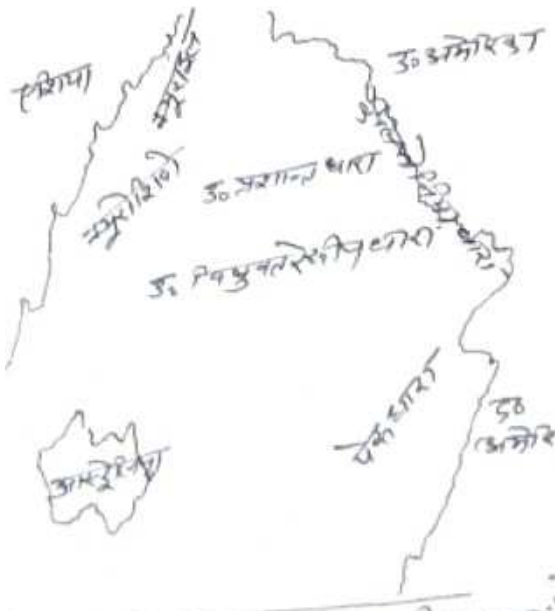

1. उत्तरी विषुवत रेखीय धारा
2. दक्षिणी विषुवत रेखीय धारा
3. प्रतिविषुवत रेखीय धारा
4. क्यूरोसिवो धारा
5. ओयाशिवो धारा
6. कैलिफोर्निया धारा
7. पीरू धारा
8. एल निनो तथा ला निना धारा

प्रशान्त महासागरीय धाराएं

31.

रजि. नं. 144 /जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

महासागरीय संसाधन

महासागरीय जल तथा नितल (bottom) से सम्बन्धित जैविक एवं अजैविक संसाधनों को सागरीय संसाधन कहते हैं।

⇒ सागरीय मण्डल (maritime zones)
- → क्षेत्रीय सागर
- → विशिष्ट आर्थिक मण्डल

वर्गीकरण

① सागरीय जैविक संसाधन (marine biological resources)
- (अ) खाद्य संसाधन
  - i) जन्तु संसाधन
  - ii) पादप संसाधन
- (ब) अखाद्य संसाधन (non food resources)
  - i) प्रवाल
  - ii) सीप

② सागरीय खनिज संसाधन
- (अ) स्थिति के आधार पर
  - (i) महाद्वीपीय मग्नतटों के निक्षेप रूप के खनिज
  - ii) महाद्वीपीय ढालों पर पाये जाने वाले खनिज
  - iii) गहरे सागरों की तली में पाये जाने वाले
- (ब) प्रकृति के आधार पर
  - i) धात्विक खनिज
  - ii) ईंधन खनिज
  - iii) निर्माण सामग्री

③ ऊर्जा संसाधन
- (क) परम्परागत ऊर्जा
  - i) खनिज तेल
  - ii) प्राकृतिक गैस
- (ख) गैर परम्परागत ऊर्जा
  - i) ज्वारीय ऊर्जा
  - ii) तरंग ऊर्जा
  - iii) बायोमास ऊर्जा

रजि. नं. 1 ... जयपुर 2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बास, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

"राजस्थान भूगोल" II paper (1)

(बी. ए. प्रथम वर्ष)

* राजस्थान का भौतिक स्वरूप एवं विभाग *

चार भाग

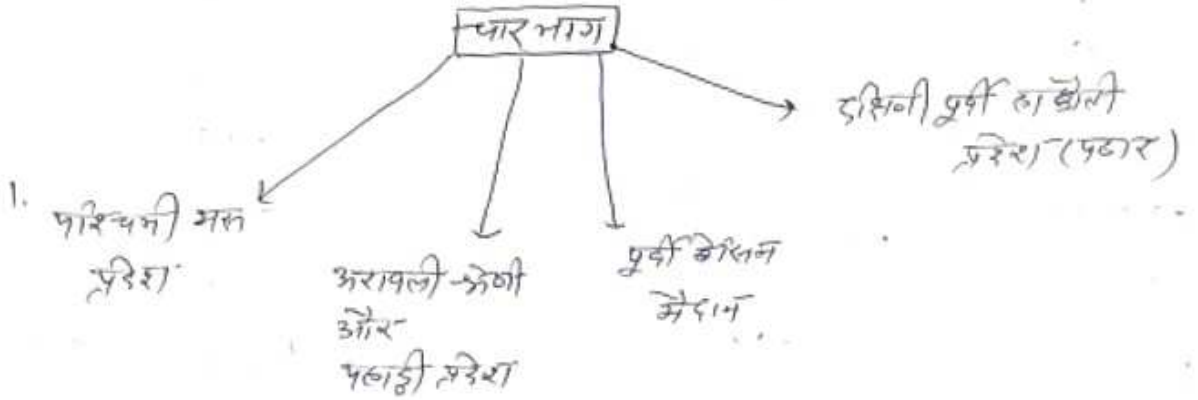

1. पश्चिमी मरु प्रदेश
- अरावली श्रेणी और पहाड़ी प्रदेश
- पूर्वी मैदान
- दक्षिणी पूर्वी हाड़ौती प्रदेश (पठार)

* राजस्थान की जलवायु *

प्रभावित करने वाले तत्व ⟶

1. स्थिति
2. समुद्र से दूरी
3. धरातल
4. अरावली पर्वत श्रेणियों की दिशा
5. धरातल की ऊँचाई एवं स्वभाव

राजस्थान जलवायु की विशेषताएँ =>

(1) भिन्न जलवायु प्रदेश

(2) सामयिक वर्षा

(3) अपर्याप्त वर्षा

(4) वर्षा की अनिश्चितता

(5) वर्षा की अनियमितता

(6) खण्ड वृष्टि

(7) वर्षा की असमानता

(8) अतिवृष्टि

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु [illegible] जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर- 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* राजस्थान का अपवाह तंत्र *

Rajsthan - Drainage system and Lakes

- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ
  - चम्बल
  - बनास
  - गम्भीरी
  - बेड़च
  - कोठारी
  - पार्वती
  - खारी
  - कालीसिन्ध
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ
  - माही
  - सोम
  - जाखम
  - साबरमती
  - पश्चिमी बनास
- आन्तरिक प्रवाह
  - घग्घर
  - कान्तली
  - साबी
  - काकनेय काकनी

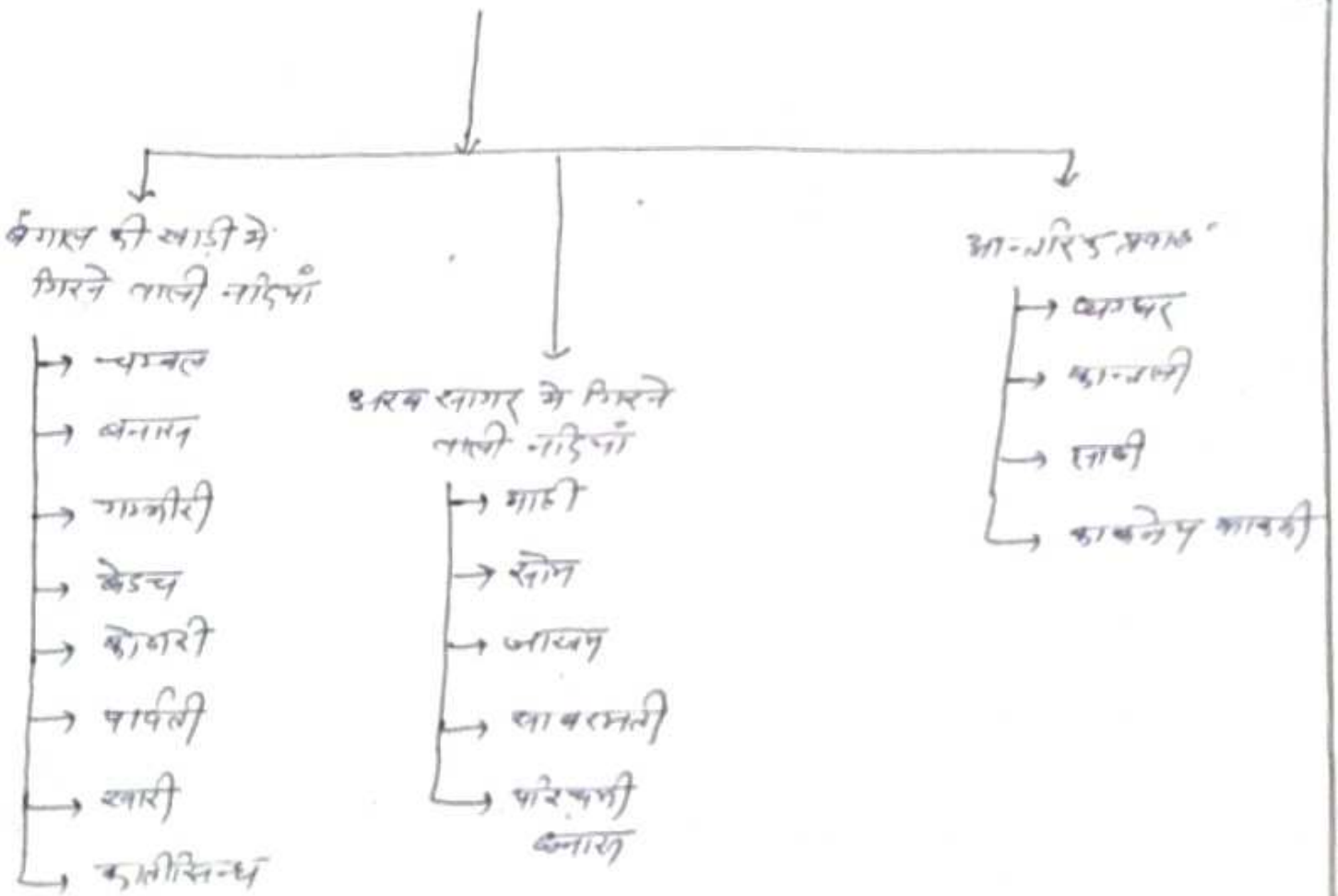

रजि. नं. 141/जयपुर/2005-06 मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

②

मृदा संसाधन (राजस्थान की मिट्टियाँ)
Soil Resources

● राज्य मे मिट्टी के प्रकार - 1. रेतीली मिट्टी
2. भूरी और रेतीली मिट्टी
3. लाल व पीली मिट्टी
4. लाल व लोमी मिट्टी
5. मिश्रित लाल व काली मिट्टी
6. मध्यम काली मिट्टी
7. कांपीय मिट्टी
8. भूरी रेतीली कछारी मिट्टी
9. लवणीय मिट्टी

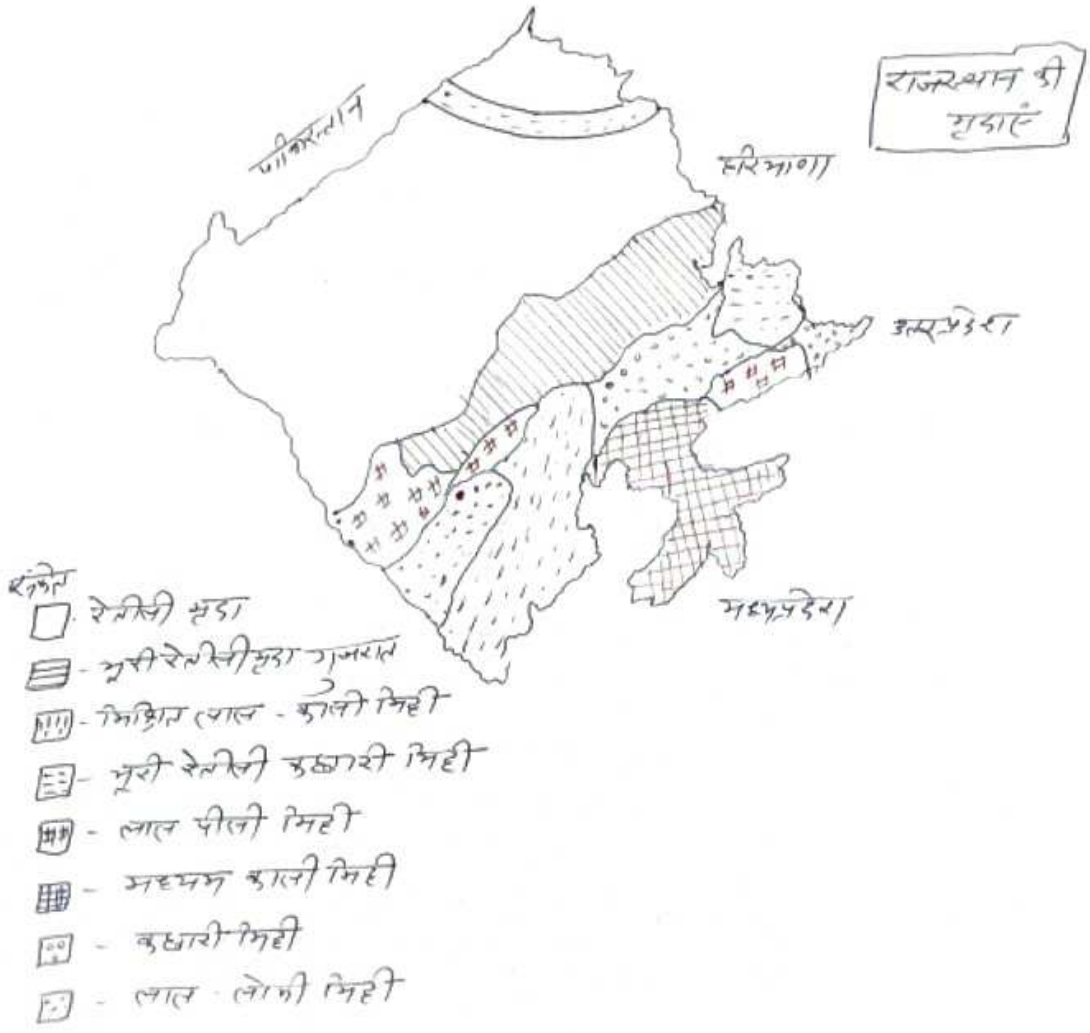

रजि. नं. ... 2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

● वनस्पति प्रकार व वितरण ●
Natural Vegetation and Forest Resources

वन प्रकृति अनुपम संरचना है, यह आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वनों के कमजोर विकास हेतु प्राकृतिक, सरकारी व आर्थिक कारक उत्तरदायी है जिसमें 61% भाग मरुस्थल का आता है।

● वनो को प्रभावित करने वाले कारक ⇒
i) जलवायु (climate)
ii) प्राकृतिक कारण (Natural cause)
iii) जैविक कारक (Biotic factors)

● वनो का वितरण ⇒
(i) पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश के वन
(ii) पश्चिमी प्रदेश के वन

● वनो का वर्गीकरण ⇒
1) शुष्क देसी सागवान वन
2) आर्द्र चौड़ी पत्ती वाले वन
3) मिश्रित पतझड़ वाले वन
4) सालर आदि वन
5) नदी घाटी वन
6) उष्ण कटिबंधीय काँटेदार झाड़ीवाले वन
7) उपोष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित ...)

साईं का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ़, अजमेर 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(2)

UNIT - 2

* राजस्थान के खनिज *

→ खनिजों का वर्गीकरण

धात्विक

- लोहा
- तांबा
- सीसा जस्ता
- [illegible]
- मैंगनीज
- टंगस्टन
- चांदी

अधात्विक

- (ग्रेनाइट पत्थर)
- आणविक खनिज
- उर्वरक खनिज
- मूल्यवान पत्थर
- रासायनिक खनिज
- इमारती पत्थर
- अन्य अधात्विक खनिज

* राजस्थान में औद्योगिक विकास एवं उद्योग *

→ उद्योगों का स्तर या आकार के आधार पर वर्गीकरण

↳ (क) बड़े स्तर / पैमाने के उद्योग

↳ (ख) लघु स्तर / पैमाने के उद्योग

→ उपयोग व उद्देश्य के आधार पर वर्गीकरण

(क) उपभोग उद्योग

(ख) इंजीनियरिंग उद्योग

(ग) रासायनिक उद्योग

(घ) खनिज आधारित उद्योग

(ङ) इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

(9)

* राजस्थान की जनसंख्या * Population of Raj'sthan

Human Resources

⇒ राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि

⇒ राजस्थान में जनसंख्या वितरण

⇒ राजस्थान में जनसंख्या घनत्व

⇒ राजस्थान में जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक

⇒ राजस्थान में लिंगानुपात

* राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ *

major castes

- राजपूत
- ब्राह्मण
- कृषक
- जाट
- अनुसूचित जातियाँ
- अनुसूचित जनजातियाँ

⇒ राज० में जातियों का भौगोलिक वितरण

प्रमुख जनजातियाँ
→ भील
→ मीणा
→ गरासिया
→ सहरिया

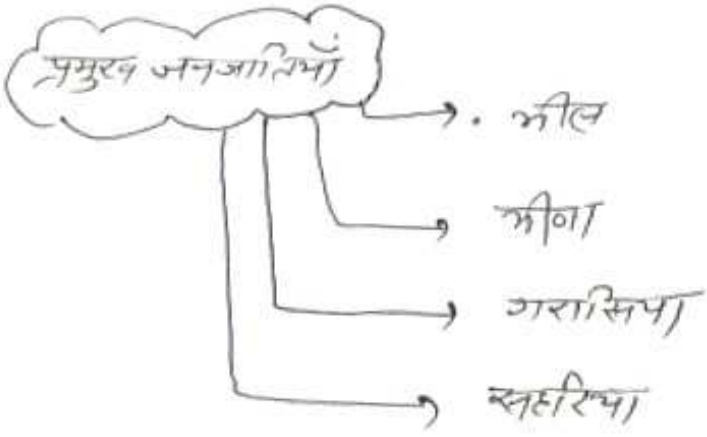

रजि. नं. 141/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* राजस्थान में पर्यटन * (Tourism)

II unit

* पर्यटन का अर्थ

* पर्यटन के प्रकार → (i) देशी / स्वदेशी पर्यटन
  (ii) विदेशी पर्यटन

* पर्यटन का महत्व

* पर्यटन एवं अर्थव्यवस्था ⇒
  1) विदेशी मुद्रा का अर्जन
  2) रोजगार उपलब्धि का साधन
  3) सार्वजनिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर का संरक्षण

पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण

① (I) भौतिक आधार पर निर्धारित पर्यटक स्थल
- (क) धरातल
- (ख) जलवायु
- (ग) नदियाँ झीलें
- (घ) जल प्रपात
- (ङ) वन, वन्य जीव, अभयारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान
- (च) नैसर्गिक सौन्दर्य स्थल · सुरम्य स्थल

② (II) पर्यटन का सांस्कृतिक आधार
- (क) पुरातात्विक स्थल
- (ख) ऐतिहासिक स्थल
- (ग) दुर्ग
- (घ) महल
- (ङ) धार्मिक स्थल

③ स्थापत्य वास्तुकला के स्थल

रजि. नं. 122/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्युकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर - 305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

* स्वतंत्रता पश्चात् से जनसंख्या वृद्धि के कारण, समस्याएँ एवं समाधान *

* जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण →

1. जन्मदर एवं मृत्युदर (Birth Rate & Death Rate)
2) विवाह योग्य उम्र
3) गरीबी व पिछड़ापन
4) अशिक्षा व अज्ञानता
5) भाग्यवादिता एवं सामाजिक सोच
6) परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति उदासीनता
7) दम्पत्ति सुरक्षा दर का नीचे होना।

समस्याएँ ⟹

- पेयजल की समस्या
- बेरोजगारी की समस्या
- निर्धनता में वृद्धि
- आवास की समस्या
- देश की आर्थिक स्थिति पर जोर

समाधान ⟹

- कम उम्र में विवाह को रोकना
- सामाजिक तथा प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा
- माता व बच्चों के स्वास्थ्य की विशेष जानकारी
- शिक्षा प्रसार
- नवीन नीतियों द्वारा सुधार लाना
- जनचेतना कार्यक्रम लागू करना।

मोबाइल : 9314618091
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

⑤

UNIT = 3

* राजस्थान में यातायात *

- राज. में सड़क परिवहन
- राजस्थान में रेलमार्ग
- सुरंग
- वायु परिवहन

* राजस्थान का भौगोलिक प्रदेशों का विस्तार वर्णन *

राज० के भौगोलिक प्रदेश

प्रो० रामलोचन सिंह के अनुसार राज० का भौगोलिक विभाजन ⇒

① राजस्थान का मैदान
- (अ) जैसलमेर मरुस्थली
- (ब) बाड़मेर मरुस्थली
- (स) बीकानेर चुरू मरुस्थली

② राजस्थान बांगड़ प्रदेश
- (अ) घग्घर प्रदेश
- (ब) शेखावाटी प्रदेश
- (स) नागौर प्रदेश
- (द) लूनी प्रदेश

रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

③ राजस्थान का पठार
(अ) उत्तरी अरावली प्रदेश
(ब) मध्य अरावली प्रदेश
(स) दक्षिणी अरावली प्रदेश

④ चम्बल बेसिन प्रदेश
(अ) निम्न चम्बल बेसिन
(ब) मध्य चम्बल बेसिन

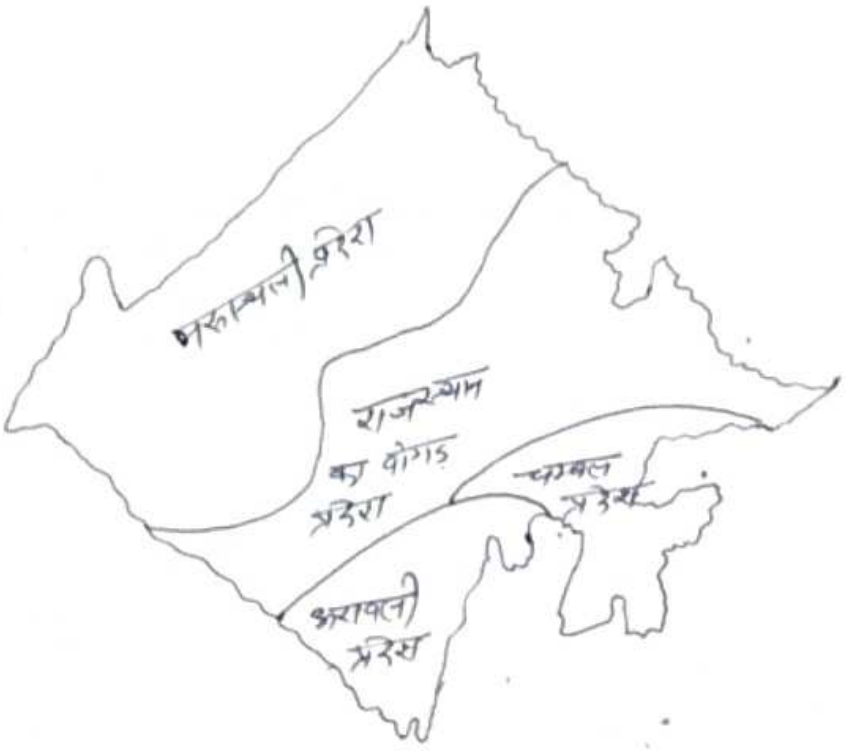

राज० के भौगोलिक प्रदेश (डा० आर० एल० सिंह के अनुसार